अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सर्वत्र अहिंसा का विकास अपेक्षित

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 15 मार्च।

''आज नये रास्ते की जरूरत है, जो रास्ता है जिस पर लोग चल रहे हैं, उससे न आदमी भय मुक्त है, अभय नहीं है, न विद्यार्थी भयमुक्त है, न अध्यापक भयमुक्त है। ऐसा लगता है अभय शब्द ही खोता जा रहा है। जो हिंसा सुरक्षा के लिए थी वह आज दूसरों को मारने के काम आ रही है। इसलिए भगवान महावीर ने कहा था शस्त्रों का निर्माण मत करो। श्रावक की आचार संहिता में शस्त्रों का संयोजन भी मत करो। समाज तब सुखी रहेगा जब वह अशस्त्र की भाषा को समझेगा किंतु आज तो शस्त्र की भाषा को समझा जा रहा है।''

उक्त विचार रविवार को तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवसरण में धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाये।

आचार्यप्रवर ने कहा कि परिवार में समाज में राष्ट्र में और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सर्वत्र एक अहिंसा का विकास हो, मैत्री और शांति का विकास हो तो आदमी अभय हो सकता है, किंतु आर्थिक प्रलोभन इतना बढ़ गया है जो एक बड़ी समस्या बना हुआ है। बड़े शहरों की स्थिति है कि विद्यार्थी पढ़ने के लिए जाता है माता-पिता के मन में भय, बना रहता है कि वह अध्ययन कर वापिस विद्यालय से घर सुरक्षित पहुंचेगा या नहीं। अपहरण और फिरोती की आशंका निरंतर बनी रहती है। जब तक समाज अच्छा नहीं होगा तब तक सरकार भी कुछ नहीं कर सकती। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से वैचारिक क्रांति की थी अगर वह नैतिकता की क्रांति आज व्यापक बने तो एक अभय का वातावरण बन सकता है। नैतिकता के बिना वह संभव नहीं है। एक युग होता है नैतिकता का युग और एक होता है आर्थिक युग। आज कोरा आर्थिक युग हो रहा है। बिना मतलब हत्या का युग है, ऐसा भयंकर युग कभी अतीत में देखा नहीं, युद्ध होता था मोर्चे पर युद्ध लड़ा जाता था, सैनिकों का युद्ध होता किंतु जनता में कोई युद्ध नहीं था। आज तो हर पग-पग पर चाहे बस हो, रेल हो, कहीं भी हो इस हिंसक वातावरण में एक अहिंसा के स्वर को व्यापक बनाने की जरूरत है।

सबसे बड़ा सुख है अभय, भय मुक्त है तो आदमी जंगल में बाघों, शेरों के बीच सुख से सो सकता है। भय युक्त है डरा हुआ है तो दो सौ, चार सौ करोड़ के भवन में भी सुख से नींद नहीं ले रहा है। सबसे बड़ा सुख है अभय। वह अहिंसा मैत्री के बिना संभव नहीं है।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि एक दार्शनिक कथन जो व्यक्ति एक को जान लेता है, वह सबको जानलेता है और जो सबको जान लेता है वह एक को भी जान लेता है। एक को समग्रता से जान लिया जाए तो सर्वथा ज्ञान हो सकता है। जैन दर्शन में द्रव्य और पर्याय, यानी हमारी दुनिया में जो कुछ है वह या द्रव्य है या पर्याय है, द्रव्य में पर्याय होता है दुनिया में स्थिरता भी है तो परिवर्तशीलता भी है। केवल परिवर्तन ही नहीं है, और केवल स्थिरता ही नहीं है दोनों का योग है। द्रव्य अपने आप में स्थायी है और पर्याय अस्थायी है।

इस अवसर पर मुनि मोहनलालजी 'शार्दुल' भीलवाड़ा चतुर्मास संपन्न कर गुरु चरणों में उपस्थित हुए तथा अपनी भावनाएं व्यक्त की।

इस अवसर पर बीदासर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री चौथमल बोथरा ने विधायक श्री राजकुमार रिणवा को अणुव्रत साहित्य भेंट कर स्वागत किया।

2011 के मर्यादा महोत्सव की अर्ज

बीदासर, 15 मार्च।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की सेवा में उपस्थित होकर विधायक राजकुमार रिणवा के नेतृत्व में राजलदेसर के सैकड़ो श्रावकों ने 2011 का मर्यादा महोत्सव राजलदेसर में करने की पूरजोर अर्ज की। इनके साथ राजलदेसर नगरपालिकाध्यक्ष श्री मांगीलाल प्रजापत, पत्रकार श्री कुंदन शर्मा आदि थे।

मांग के प्रत्युत्तर में आचार्यप्रवर ने फरमाया कि किसान बीज बोता है तो वह जानता है पहली वर्षा से फसल नहीं पकेगी। तीन चार बार वर्षा होगी तब फसल पकेगी आज तो आपने बीज का वपन किया है। आपकी अर्ज पर विचार किया जायेगा।

'महाप्रज्ञ ने कहा' पुस्तक का 31वां भाग लोकार्पित

बीदासर, 15 मार्च।

''महाप्रज्ञ ने कहा'' पुस्तक का 31वां भाग श्री विवेक कठोतिया ने आचार्यप्रवर को लोकार्पण हेतु भेंट की। श्री नौरतनमल दूगड़ ने साहित्य के बारे में जानकारी देते हुए अपने विचार व्यक्त किये।

बीएड की छात्राओं ने लिया प्रशिक्षण

बीदासर, 15 मार्च।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ मानव हितकारी संघ राणावास की बीएड कॉलेज की छात्राओं ने उपस्थित होकर प्रेक्षाध्यान जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण लिया।

आचार्य श्री ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि कन्या को संस्कारी करने से पूरा परिवार संस्कारी होता है। जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण का महत्त्वूपर्ण योगदान है। महिला का खुद के संस्कारों का निर्माण होना चाहिए।

प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने छात्राओं को प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान का प्रयोग करवाते हुए प्रेक्षाध्यान की जानकारी दी।

इस अवसर पर श्री तेजराज पुनमिया ने अपने विचार व्यक्त किये।

– अशोक सियोल